मानवतावादी पार्टी से जुड़े कुछ सवाल और जबाव

- राजनीतिक परिदृश्य में मानवतावादी पार्टी का क्या स्थान है?
  मा. पा. एक उदीयमान पार्टी है। अतः यह कहना अभी जल्दबाज़ी भी होगी और मनमानी भी कि राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में इस पार्टी का क्या स्थान है मगर यह कहा जा सकता है कि हम एक राष्ट्रीय, मार्क्सवाद के विरोधी दल का हिस्सा है, हम मानवतावादी तथा सहकारितावादी हैं।

- मानवतावाद व मार्क्सवाद में क्या अंतर है?
  सबसे बड़ा अंतर यह है कि मानवतावाद राज्य को नहीं मानवता को सबसे अहम स्थान देता है। मार्क्सवाद के अनुसार मनुष्य का व्यवहार उन "विषयपरक स्थितियों" का परिचायक है जिन्हें बदलकर ही समाज में बदलाव आ सकते हैं जबकि मानवतावाद ही मनुष्य की इच्छा व प्रवृति को समझता है और मानता है कि जरूरी बदलाव व क्रान्ति के लिए ये आवयश्क हैं। मार्क्सवाद के अनुसार केवल आर्थिक ढाँचे में बदलाव लाकर एक बेहतर मनुष्य की कल्पना संभव है जबकि मानवतावाद बेहतर मनुष्य के साथ ही बेहतर समाज को उपर्युक्त बदलाव के लिए ज़रूरी मानता है। मार्क्सवाद का विश्वास है कि वर्ग–संघर्ष ख़त्म करने का एकमात्र उपाय है–मज़दूर वर्ग की तानाशाही। परंतु सच यह है कि इससे पूर्णतः राज्य के हाथ में शासन चला जाता है और फिर से एक शासक वर्ग का जन्म होता है। मानवतावाद के अनुसार मनुष्य हर प्रकार की शारीरिक–मानसिक के अनुसार मनुष्य हर प्रकार की शारीरिक–मानसिक यातनाओं से बचने व दूर रहने के लिए जो कदम उठाता है उन्हीं में सभी मनुष्यों की स्वतंत्रता व विश्व का हित छिपा है। आख़िरकार, मार्क्सवाद भी अन्य हिंसक दलों की भाँति किसी न किसी रूप में हिंसा को अपना हथियार मानता है परंतु मानवतावाद पूरी तरह अहंसा को अपनी कार्य–प्रणाली बनाकर उसी पर कायम रहता है।

- क्या मा. पा. पूँजीवाद के अधीन सहयोगवाद की अनुयायी है?
  नहीं, मा. पा. केवल सहयोगवाद की अनुयायी है। मा. पा. पूँजीवाद या संप्रदायवाद दोनों को ही नकारती है।

- सहयोगवाद किन मायनों में पूँजीवाद और संप्रदायवाद से अलग है?
  सबसे बड़ा फ़र्क है–आम लोगों की सहभागिता।
  पूँजीवाद समर्थक देशों में सहकारिता के नाम पर कुछ निजी कंपनियाँ वहाँ राज कर रही हैं जबकि समाजवादी देशों में सहभागिता व सहभागी नौकरशाह हैं। "एक व्यक्ति, एक मत" का पालन करने की बजाय यह एक प्रशासनिक समिति बन गई है जो हर निर्णय लेने का अधिकार रखती है।
  समाजवाद को तो परिवर्तित कर बेहतर बनाया जा सकता है पर पूँजीवाद के साथ ऐसा नहीं है। समाजवाद को बेहतर बनाने का उपाय है ऐसे सहकारियों को सम्मिलित करना जो एक विकेंद्रित आर्थिक इकाई बन सकें।

- तो अन्य कोई समाजवादी दल क्यों न चुनें?
  इसके पक्ष (कारण) है– आदर्शवादी व व्यावहारिक। जहाँ तक आदर्शवाद की बात है, हम मूलतः मानवतावादी हैं, समाजवादी हैं। समाजवाद के बिगड़े स्वरूप में मनुष्य से अहम राज्य है। और व्यावहारिक पा को देखा जाए तो हमारी कार्य–प्रणाली में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

- भारत में उदीयमान मा. पा. का अन्य देशों की मा. पा. के बीच क्या संबंध?
  भारत की मा. पा. तथा अन्य देशों की मा. पा. का उदय विचारों की एक ही धारा का परिणाम है– मानवतावादी आदर्शवाद।
  इन पाँच बिंदुओं (मूल विचारों) पर ये सभी पार्टियाँ सहमत हैं–मनुष्य (मानवता) की अहमियत; सहयोगवाद को तंत्र बनाने की क़वायद; भेदभाव में अविश्वास; एकाधिपत्य में अविश्वास; सत्य स्वतंत्रता के लिए विकल्प का सिद्धांत तथा हिंसा से लड़ने के लिए अहिंसा का हथियार अपनाना। एशिया में, प्रादेशिक स्तर पर हम सभी एक समान मोर्चे के पक्ष में हैं जो बहुदेशीय शक्तियों, महाशक्तियों व निगमों की अवांछित गतिविधियों के विरुद्ध हो। ऊपर बताए गए बिंदु व्यापक संदर्भ के लिए हैं। प्रत्येक देश के अपने विशिष्ट मुद्दों के बारे में प्रत्येक पार्टी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेती हैं।

- मा. पा. का चिह्न किसका परिचायक है?
  पार्श्व भाग में दिखने वाला संतरी/नारंगी रंग रुचियों की घनिष्ठता का प्रतीक है। काले बोर्डर से सजा सफेद रिबन मोबियस के रिबन का नया रूप है। वे एक महान गणितज्ञ थे, साथ ही वे किसी भी स्थान का प्राकृतिक वर्णन करने में भी महारत रखते थे। उन्होंने एक ऐसे रिबन का आविष्कार किया जिसे एक बार घुमाकर यदि इसके सिरों से जोड़ा जाए तो केवल एक ही सतह नज़र आती है। इसका यह अर्थ निकलता है कि एक ही सतह पर लगातार कई लकीरें खींची जा सकती हैं पर फिर भी इसके सिरों को छेड़ना ज़रूरी नहीं। ये अबाधित रूप से परस्पर जुड़े हैं। यह रिबन अनंतता का त्रिसंरचनात्मक प्रतीक है जैसा कि गणित व तर्कशास्त्र में होता है। यह अनंतता का प्रतीक अर्थात् रिबन के सिरे हमारा रचनात्मक व विस्तृत दृष्टिकोण दर्शाता है। अतः व्यक्तिगत व सामाजिक परिवर्तन परस्पर निर्भर हैं। ये दोनों ही एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं; बाह्य सक्रियतावाद (सामाजिक) तथा आंतरिक

(व्यक्तिगत) स्पष्टीकरण आदि। इन दोनों में ही लेन–देन के संबंध है और इसीलिए ये परस्पर जुड़े हैं। पर संक्षेप में, हम कहते हैं कि हमारा चिह्न मनुष्य को भविष्य में संभव प्रगति के लिए संभावनाओं की अनंतता के रूप में अपनाता है।

- अहिंसा (सक्रिय) कार्य–प्रणाली क्यों?
  मा. पा. के अनुसार अहिंसा को अपनाना अवसरवाद नहीं है बल्कि यह नीतिशास्त्र का हिस्सा है। हमारा मुख्य आदर्श, मूल्य मनुष्य–जीवन है। जैसा कि नीतिशास्त्र मानता हैं कि साधन जिसके कारण क्रांति संभव है, उसे उद्देश्यों से जुड़ना चाहिए, यह साधन है–मनुष्य। प्रागैतिहासिक अर्थात् छड़ी के युग को छोड़ हम अपनी बुद्धि का इस्तेमाल कर, अपनी कल्पना–शक्ति की सहायता से मनुष्य के सत्य इतिहास में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं। जबकि हिंसा सदैव समस्याओं को हल करने की बजाय उन्हें उस स्तर तक बढ़ाती आई है जहाँ ये व्यक्तिगत संबंधों के साथ–साथ अन्तर्देशीय संबंधों को भी बिगाड़ देती हैं।

- क्या हिंसा मनुष्य में निहित नहीं है?
  बिल्कुल नहीं। हिंसा एक ऐसी आदत है जिसे व्यक्ति सामाजिक परिवेश से ही ग्रहण करता है। मा. पा. सामाजिक तथा व्यक्तिगत दोनों ही पक्षों में सुधार लाने का पक्षधर है। इसीलिए हम सक्रिय अहिंसा को अपनी कार्य–प्रणाली का हिस्सा मानते हैं। हम इसी के बूते समाज सुधार की आशा रखते हैं।

- मा. पा. के अनुसार 'स्वतंत्रता' क्या है?
  मनुष्य की उपलब्धियों पर यदि नज़र डालें तो ये कम नहीं पर यदि इन सबको एक बिंदु में समेटा जाए तो हम पाएँगे कि मानव जाति की सबसे बड़ी उपलब्धि है–स्वतंत्रता की प्राप्ति। राजनैतिक पक्ष से स्वतंत्रता का अर्थ है–विकल्पों की उपलब्धता! ये विकल्प उसे बाध्यताओं से बचाते हैं। इसीलिए विकल्पों का सिद्धांतों हमारा मूलभूत सिद्धांत है। मा. पा. स्वतंत्रता के विरुद्ध एकाधिपत्य में विश्वास नहीं रखती। एकाधिपत्य आम जनता से कई साधन व सुविधाएँ जैसे संचार, उत्पादन के अधिकार छीन लेता है। जहाँ भी राजनैतिक, आर्थिक या अन्य कोई भी एकाधिपत्य है, वहाँ स्वतंत्रता संभव नहीं है।

- मा. पा. के अनुसार भागीदारी का क्या अर्थ है?
  मा. पा. मानती है कि भागीदारी का अर्थ है–निर्णय लेने में भागीदारी। समस्याएँ आम जनता से जुड़ी है और इसीलिए जनता ही इनका सही हल ढूँढ सकती हैं जनता की सही सहभागिता के लिए प्रत्यक्ष लोकतंत्र होना चाहिए जो जनमत–संग्रह, आनुपातिक जनमत–संग्रह, निषेधाकिार आदि से संभव है। इसीलिए मा. पा. लोकतंत्र की पक्षधर है, इसी से जनता मूलभूत विषयों पर निर्णयों में भागीदारी दे सकती है। इसी स्थिति में हम सच्चे व वास्तविक भागीदारी व विकल्प की कल्पना कर सकते हैं। वर्तमान में भागीदारी औपचारिक है क्योंकि उपुर्यक्त में से कोई भी क्रियाविधि वास्तव में अपनाई नहीं जा रही और निर्णय कुछ हाथों में ही सिमटकर रह गए हैं। वर्तमान में, भागीदारी केवल राज्य, राष्ट्रीय व नगरपालिका चुनावों में मतदान तक सीमित है। इसके अलावा, केवल रैली निकालने व नारे लगाने के लिए जनता आगे आती है और वह भी किसी पार्टी के प्रचार के लिए। अतः निर्णय लेने में ख़ासतोर पर जिनसे भेदभाव होता है, वे हैं–महिलाएँ, युवा व कामगार वर्ग।

- आप ऐसा क्यों कहते हैं कि मा. पा.–"पार्टी से कुछ अधिक है"?
  मा. पा. नई है, इसके पास सत्ता भी नहीं है पर बावजूद इसके, यह कई पारंपरिक पार्टियों से कई मायनों में आगे है। शुरुआत के लिए, अवसरवादी, रूढ़िवादी पार्टी, जैसे–पूँजीवादी, समाजवादी आदि से कहीं बेहतर व सहनशील आदर्शवाद का पालन करती है। यह पार्टी कामगार, युवा व महिला वर्ग से कोई भेदभाव नहीं रखती। इस पार्टी का आधार मानव के ऐच्छिक प्रयास हैं। पार्टी के निर्णय व संचालन में एक व्यक्ति की अधिकाधिक सहभागिता उसके द्वारा पार्टी के लिए किए गए काम पर निर्भर करती है। मा. पा. सही मायनों में लोकतांत्रिक है। पार्टी में प्राधिकरण में नयापन लाने हेतु साल में एक बार आंतरिक चुनाव होते हैं। यह पार्टी के कुछ गिने–चुने प्रतिनिधियों द्वारा नहीं बल्कि सभी सदस्यों के प्रत्यक्ष मतदान से होता है। सबसे अहम बात है कि पार्टी व्यक्तिगत व सामाजिक रूपांतरण दोनों पर एक साथ विचार करती है।

- क्या मा. पा. तकनीकी, कंप्यूअर आदि के खिलाफ़ है?
  नहीं, हमारा विश्वास है कि तकनीकी मनुष्य की क्षमताओं, संभावनाओं को बढ़ाती है, कई भौतिक समस्याओं को हल करती है। शिक्षा, औषध विज्ञान, संचार, सूचना आदि में तकनीकी का बड़ा योगदान है। तकनीकी को जिस फल की इच्छा से मनुष्य प्रयोग करता है, वही फल वह इससे पाता है पर ग़लत यह है कि मनुष्य उसे कई बार सारे निर्णय लेने का हक़ दे देता है, मा. पा. इसीके विरुद्ध है। तकनीकी जहाँ स्वतंत्रता का उद्देश्य पूरा करती है, वहीं वह प्रयोग करने वाले की इच्छानुसार उत्पीड़न का कारण भी बनती है। बेशक़, मा. पा. ऐसी तकनीकी की पक्षधर है जो मानवता को नहीं भूलती। इसे मुख्य तौर पर जनहित में प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि लोग कुपोषण, बीमारियों, ग़रीबी, अशिक्षा आदि से स्वतंत्र हों नाकि केवल नौकरशाहों की सेवा में ही इसका प्रयोग होना चाहिए। यही है, एक मानवतावादी तकनीकी।